Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

मैला आँचल में आदिवासी चिंतन की एक झलक

डॉ. धनेश्वर मांझी
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं टीचर्स इंचार्ज, संताली विभाग, विश्वभारती, शांतिनिकेतन

Article Info
Volume 4 Issue 2
Page Number : 209-213
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 10 March 2021
Published : 25 March 2021

शोध सारांश– उपन्यास में उनके संघर्ष, न्यायप्रियता और आत्मसम्मान को कई बार रेखांकित किया गया है। भूमि, स्वतंत्रता और पहचान के लिए उनका प्रतिरोध आदिवासी चिंतन की मूल आत्मा है, जिसे रचनाकार ने सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। मैला आँचल में आदिवासी समाज का चित्रण केवल एक पृष्ठभूमि भर नहीं है, आदिवासी समुदाय के संघर्ष, अस्तित्व और गरिमा को भी संवेदनशीलता और सम्मान के साथ प्रस्तुत करता है। मेरी निगाह में यह उपन्यास इसलिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि लेखक ने आदिवासी जीवन के उस पक्ष को मुख्यधारा समाज के सामने रखा जिससे वे परिचित नहीं थे।

मुख्य शब्द – मैला आँचल, आदिवासी, संवेदनशीलता, आत्मसम्मान, न्यायप्रियता, मुख्यधारा।

''मैला आँचल'' उपन्यास हिंदी उपन्यासों के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस उपन्यास में पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक अंचल विशेष का चित्रण रचनाकार फणीश्वर नाथ 'रेणु' ने स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक बाद किया है। इस उपन्यास की खासियत यह है की इसमें रचनाकार स्वतंत्रता पूर्व देश की स्थिति, लोगों की मानसिकता का चित्रण करने के साथ–साथ स्वतंत्र देश में लोगों की मानसिकता, देश की स्थिति आदि का चित्रण बहुत सफलता एवं सादगी के साथ करता हैय जाहिर है इस उपन्यास में रचनाकार उस समय की भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति का चित्रण तो कर ही रहा हैय वहां के आदिवासी समाज की स्थिति के साथ–साथ उनकी सोच समझ का भी चित्रण करता हुआ दिखता है। मेरे लिए यह आश्चर्यकर और सुखकर है की एक गैर आदिवासी लेखक ने आदिवासी समाज की सोच और संवेदना को भी प्रमुखता के साथ इस उपन्यास में लगभग ठीक–ठाक दर्ज किया है। लेखक के पूरे मंतव्य रचना के माध्यम से जितना मैं समझ सका हूं उससे यह साफ पता चलता है की लेखक आदिवासियों के साथ मुख्य धारा का समाज किस प्रकार का व्यवहार करता है किस प्रकार से उसका शोषण करता हैय और किस प्रकार से उसे अपना नहीं मानता है ऐसे सारे कई गंभीर प्रश्नों को वह रचना में दर्ज करता है। यह भी रचनाकार साफ–साफ दर्ज कर देता है की आदिवासी हमेशा से तथाकथित मुख्यधारा के समाज से ठगे जाते रहे हैं और इस रचना में भी अपनी भलमनसाहत की वजह से ठगे ही जाते दिखाए गए हैंय आदिवासी जीवन, उनकी संस्कृति, संघर्ष, और सामंती एवं औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध लेखक की दृष्टि भी साफ दिखाई देती है।

आदिवासी समाज सामूहिकता और उत्सवप्रियता में विश्वास करता हैय अतः रचनाकार ने सामूहिकता और उत्सवप्रियता का चित्रण विस्तार से किया किया है। रचना में संथालों की सभा का एक दृश्य है जहाँ सभी मिलकर सामूहिक निर्णय और उत्सव में भाग लेते हैं। यह आदिवासी जीवन की सामूहिकता और

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सहयोग की भावना को दर्शाता है– "जो जोतेगा वह बोएगा, जो बोएगा वह काटेगा३"[1] जैसी इस उपन्यास में दर्ज पंक्तियाँ श्रम के सामूहिक अधिकार और न्यायपूर्ण वितरण की अवधारणा को प्रकट करती है। आदिवासियों के जल–जंगल–जमीन से उनके संबंध और संघर्ष का सजीव चित्रण इस उपन्यास में लेखक ने दर्ज किया है। साथ ही जमींदारी व्यवस्था द्वारा आदिवासियों की जमीन छीनने की प्रक्रिया का लेखक ने प्रमुखता के साथ दर्ज किया है। रचना में साफ दिखता है कि आदिवासी समाज पर बाहरी सत्ता जमींदार, अंग्रेज, साहूकार आदि ने किस तरह से नियंत्रण कर लिया है। उपन्यास में सरकार बहादुर इनको कुछ नहीं कर सकता जैसी बातें सत्ता के विरुद्ध आदिवासी अविश्वास और उनके शोषण के अनुभव को सामने लाती हैं। संथालों की नृत्य, गीत और लोक धुनें– जैसे "रिंगा रिंगा ता धिन ता...." – आदिवासी जीवन की सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाती हैं। बांसुरी की धुन, पायल की छन छन और सामूहिक नृत्य प्रकृति के साथ उनके गहरे संबंध को दिखाते हैं। रचना में बार–बार आदिवासी समुदाय की न्यायप्रियता, आत्मसम्मान और जमीन पर उनके अधिकार की माँग को प्रमुखता दी गई है।

फणीश्वरनाथ रेणु का यह लेखन आदिवासी चिंतन की उस जमीनी हकीकत को उजागर करता है जिसमें सामूहिकता, प्रकृति से गहरा लगाव, सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता, और शोषण के खिलाफ प्रतिरोध स्पष्ट है। आदिवासी दृष्टिकोण से यह पाठ न केवल उनके जीवन की व्यथा को दर्शाता है बल्कि उनके संघर्ष और अस्तित्व की लड़ाई को भी सम्मान के साथ प्रथम दृष्टया प्रस्तुत करता दिखाई देता है। फणीश्वरनाथ रेणु ने इस उपन्यास में कई गंभीर प्रश्नों को उठाया है वैसे प्रश्न जो या समस्याओं पर ठीक ढंग से ध्यान देना आवश्यक है। ऐसे ही प्रश्नों में एक आदिवासी जीवन की सच्चाई है वह सच्चाई यह है कि आदिवासियों को मुख्य समाज के लोगों ने हमेशा ठगने का काम किया है इस कारण से हुए यानी आदिवासी मुख्य धारा के समाज पर विश्वास नहीं करते लेकिन सोशलिस्ट पार्टी का नया–नया कार्यकर्ता बना इस उपन्यास का कैरेक्टर कालीचरण जब जो बोएगा वही काटेगा जैसा नारा देता है तो आदिवासी समाज के लोग अपने पूर्वज बुजुर्गों के अनुभव को भूलकर इनकी बातों में आ जाते हैं। उपन्यास में दिखाया है की पुनः उनके साथ धोखा ही होता है। प्रसंग देखने लायक है– "सोशलिस्ट पार्टी की सभा की खबर ने संथाल टोली को विशेष रूप से आलोरित किया है।... लेकिन यह सभा? जमीन जोतने वालों की? कर्तव्यनिष्ठ और मेहनती संथाल किसानों के दिमाग की मुद्दत से उलझी हुई गुत्थी का सही सुलझाव सुलझाव ! जमीन जोतने वालों की सभा! जमीन किसकी? जोतने वालों की! जो जोतेगा वह बोएगा, जो बोएगा वह काटेगा। कमानेवाला खाएगा, इसके चलते जो कुछ हो! कालीचरण समझ रहा है!....चारों ओर स्वस्थ्य, सुडोल, स्वच्छ और सरल इंसानों के भीड़। बिरसा मांझी का जवान बेटा मंगल मांझी कालीचरण के वाक्य को गीतों की कड़ी में जोड़ने की चेष्टा करता है ...जोहीरे जोतबे सोहिरे बोयिबे''[2] लेकिन हुआ वैसा जैसा आदिवासियों के पूर्वज कहा करते थे कि कभी भी इनपर विश्वास नहीं करना। जैसे ही आदिवासी समाज थोड़ा जागरूक होता है सारे मुख्य धारा के समाज के लोग उन्हें घेर कर न सिर्फ मारते हैं बल्कि उनके मां बहनों के साथ कुकृत्य करने से भी नहीं हिचकते। रचना में रेणु ने किसी का पक्ष लिए बगैर पूरे दृश्य का ऐसा हृदयविदारक चित्रण किया है जैसे वे उस घटना को अपनी आंखों से देख रहे हों। और इस जघन्य हत्याकांड के बाद भी विडंबना यह कि वह सभी के सभी यानी मुख्य धारा का समाज इस अपराध से भी अपने को बचा ले जाता है क्योंकि जितने सरकारी अफसर हैं वह सभी के सभी मुख्यधारा से ही संबंधित हैं। लेकिन रचनाकार अपनी ओर से यह भी दिखता है कि आदिवासी मेहनत से कभी पीछे नहीं हटते, दिखने में बड़े स्वस्थ और सुंदर दीखते हैं, मांदर की आवाज पर सारे गमों को भुला देते हैं। उनके होंठ पर हमेशा मुस्कुराहट रहती है यानी लेखक उनकी जिजीविषा का कायल दिखता है उस पर फिदा है। "बहुत से संथाल सरकारी गोली से घायल हुए

और सैकड़ो ने बिहार के विभिन्न जिलों में सफैयाकमान में काम करते–करते सारी उम्र बिता दी! इसके बाद फिर कौन चूं करता है! लेकिन मानर और डिग्गा की आवाज कभी मंद नहीं हुई, बांसुरी कभी मंद नहीं हुई और न उनके तीरों में ही जंग लगे।.....मलेरिया और कालाजार की क्रीड़ा– भूमि में भी यह सबल और स्वस्थ रहकर कीड़ा करते हैं, हड्डियों पर कलापूर्ण ढंग से तरासकर बैठाए जैसे मांस का उभार कभी सूखा नहीं। ताजे फूलों की पंखुड़ियां जैसे उनके ओंठ कभी जर्द नहीं हुए और ना किसी संथाल के पेट में कभी पील्ही बढ़ जाने की बात ही नहीं सुनी गई। अस्पताल खुलने से उनका क्या फायदा होगा? लेकिन जमीन! जोतने वालों की।"[3] एक अन्य प्रसंग का जिक्र करना मैं आवश्यक समझता हूं। जो आदिवासी जीवन के संघर्ष और उनकी जिजीविषा का प्रमाण है। जिसमें एक युवती किस तरह से हिंसक पशु चीता से भी नहीं डरती और उससे बिना डरे मुकाबला करती है और उसे मार भी देती है। प्रसंग देखने योग्य है ..."कोठी के जंगल में संथालीनें लकड़ी काट रही हैं और गा रही हैं। कुछ दिन पहले इसी जंगल में संथालिनों ने एक चीते को कुल्हाड़ी और दाब से मार दिया था। शोरगुल सुनकर गांव के लोग जमा हो गए थे। मरे हुए बाघ को देखकर भी लोगों के रोंगटे खड़े हो गए थे और बहुत तो भाग खड़े हुए थे, किंतु संथालीनें हमेशा की तरह मुस्कुरा रही थीं। मकई के दानों की तरह सफेद दंत–पंक्तियां.... और वही सरल मुस्कुराहट! चीते के अचानक हमले से दो–तीन युवतियां सामान्य घायल हो गई थी। उनके होठों पर वैसी ही मुस्कुराहट खेल रही थी। उनके जख्मों को धोकर मरहम–पट्टी करते समय डॉक्टर के शरीर में एक बार सिहर की हल्की लहरें दौड़ गई थीं । और संथालीनें खिलखिला कर हंस पड़ी थी। हं हं हं ! जख्म पर तेज दवा लगने पर इस तरह हंसना डॉक्टर ने पहली बार देखा सुना। आबनूस की मूर्तियां। जुड़े हुए गुथे हुए शीरीस और गुलमोहर के फूल। संथालीने गाती हैं –छोटी–मोटी पखुरीध चरकुलिया पिंड रे ध पोरोइनी फूटे लाल लाल।ध पासचे तेरी फूल देखी फूलय लाबेलबध पासचे तेरी आधा दिन लगित!''4 आदिवासी समाज सदैव से संघर्षशील रहा है। उनका यह संघर्ष केवल भोजन की व्यवस्था तक सीमित नहीं होता, बल्कि जीवन जीने के लिए आवश्यक आधारभूत संसाधनों को जुटाने तक फैला होता है। फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास मैला आँचल में लेखक ने इस संघर्ष को विशेष रूप से रेखांकित किया है। रेणु ने आदिवासी स्त्रियों की बहादुरी का मार्मिक चित्रण करते हुए यह दर्शाया है कि वे केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जंगल में लकड़ी इकट्ठा करने जैसे कठिन और खतरनाक कार्यों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। एक प्रसंग में, जब जंगल में लकड़ी बीनते समय एक चीता उन पर हमला करता है, तो वे स्त्रियाँ न केवल उसका सामना करती हैं, बल्कि उसे मार भी देती हैं। यह घटना उनकी निर्भीकता और सामूहिक शक्ति को दर्शाती है। आश्चर्य की बात यह है कि इस भयावह स्थिति में भी वे घबराती नहीं, बल्कि हँसते हुए परिस्थिति का सामना करती हैं। इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी स्त्रियों के लिए जीवन जीने का संघर्ष ही सबसे बड़ा युद्ध है। उनके लिए बाघ–चीतों से लड़ना उतना कठिन नहीं जितना कि रोजमर्रा की आजीविका का संघर्ष। इसके बावजूद उनके चेहरे पर मुस्कान बनी रहती है और वे प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर गीत गाते हुए जीवन को सजाती–संवारती रहती हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि वे दवा के दर्द को भी सहन कर लेती हैं, जो मुख्यधारा के समाज और डॉक्टरों के लिए आश्चर्य का विषय है। रेणु ने इन स्त्रियों की वीरता को उभारकर यह सिद्ध किया है कि आदिवासी समाज, विशेषकर स्त्रियाँ, जीवटता, साहस और सामूहिकता का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

मैला आँचल में फणीश्वरनाथ रेणु ने सरकारी तंत्र की भूमिका पर तीखा व्यंग्य करते हुए तहसीलदार, दारोगा और डॉक्टर जैसे सरकारी कर्मचारियों को आदिवासियों और आम ग्रामीण जनता का शोषक दिखाया है। उपन्यास में शोषण के अनेक स्तरों का चित्रण किया गया है, लेकिन सबसे अधिक पीड़ित आदिवासी

समुदाय है। आदिवासियों को न्याय पाने के लिए अनेक प्रकार के संघर्षों से गुजरना पड़ता है। उनकी आवाज न तो प्रशासन सुनता है, न ही अदालतें उनकी गवाही को गंभीरता से लेती हैं। उनके पास न कानूनी ताकत है, न ही संसाधन। यह स्थिति इस बात को रेखांकित करती है कि आदिवासी समाज सामाजिक व्यवस्था में उस समय में भी और आज भी हाशिए पर खड़ा है। जमीन उनके लिए केवल एक संपत्ति नहीं, बल्कि उनके जीवन और संस्कृति का आधार है। जब जमींदार उनकी जमीन छीनने की कोशिश करते हैं, तो यह उनके अस्तित्व पर सीधा हमला होता है। जमीन के लिए यह संघर्ष उनके लिए जीवन–मरण का प्रश्न बन जाता है।

इस उपन्यास का कुछ भाग हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आदिवासी समुदाय केवल एक सांस्कृतिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक न्याय की लड़ाई के केंद्रीय पात्र हैं। वे सत्ता, व्यवस्था और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध लगातार संघर्षरत हैं। आदिवासी जीवन के विरोधाभासों से भरा एक प्रसंग देखा जाए– "मुकदमा में भी स्वराज मिल गया। सभी संतालों को आजीवन कारावास हो गया। धूमधाम से सेशन केस चला। संथालों की ओर से भी पटना के बैरिस्टर आया था। बलिस्टर का खर्चा संथालिनो ने गहना बेच कर दिया था। बलिस्टर पर भी बलिस्टर हैं। यदि इस मुकदमा में तहसीलदार साहब जैसे कानूनची आदमी नहीं लगते तो इस खूनी केस से शिवशंकर सिंह, रामकृपाल सिंह और खेलावन सिंह तो हरगिज नहीं छूटते।... खर्चा ? अरे भाई! जान है तो जहान है! जब फांसी हो ही जाती तो जगह जमीन, रुपया पैसा क्या काम देता? ..... संथाल लोग इस स्वराज उत्सव में नाचेंगे... कहीं नाचते समय तीर चला दें, तब? नहीं, नहीं डॉक्टर साहब बोलते थे कि संथालीनें खुद आकर कह गई हैं ... नाचवों
तहसीलदार साहब को भी इसमें एतराज नहीं होना चाहिए। भाई जो भी कहो संथाली नाच देखते समय होश गुम हो जाता है। जुड़े में सादे फूलों के गुच्छे जब झूमर झूमर कर नाचने लगती है तो मन करता है नाच में उतर पड़े।"[5] यह कथन दर्शाता है कि संथाल समुदाय ने न्याय की उम्मीद में अपनी पूरी पूंजी लगा दी। संथालिनों द्वारा गहना बेचना एक प्रतीकात्मक बलिदान है– जो यह दर्शाता है कि न्याय पाने के लिए भी उन्हें अपनी अस्मिता को गिरवी रखना पड़ता है। आदिवासी इस स्थिति को न्याय की असमानता के रूप में देखता है जहाँ सत्ता और पूंजी का वर्चस्व गरीब और हाशिए के लोगों की न्यायिक पहुँच को बाधित करता है। अन्यान्य पूर्ण न्याय फैसले को जो मुख्यधारा के समाज के लिए सुराज है, उत्सव हैय जो आदिवासियों के विरुद्ध फैसला है, विडम्बना देखिये उस उत्सव में आदिवासी स्त्रियाँ खुद नाचने के लिए आती है इसे आप उनका भोलापण कहिये या उनकी विवशता। एक ओर संथालों को आजीवन कारावास की सजा दी गई, यानी दमन किया गया, दूसरी ओर उनके नृत्य और गीत को उत्सव का हिस्सा बनाकर समाज मनोरंजन करता है। यह विरोधाभास दर्शाता है कि बहुसंख्यक समाज आदिवासी जीवन के दर्द को नहीं, सिर्फ उसकी बाह्य सुंदरता को देखता है।

आदिवासी जीवन से जुड़े ऐसे कई गंभीर प्रश्नों को लिए फणीश्वरनाथ 'रेणु' अपने उपन्यास मैला आँचल में दर्ज करते हैं। यह उपन्यास हिंदी साहित्य के इतिहास में एक मील का पत्थर है। यह सुखद और आश्चर्यजनक है कि 1954 में एक गैर–आदिवासी लेखक होते हुए भी फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने आदिवासी समाज की संवेदनाओं, विचारों और उनके सांस्कृतिक जीवन का तुलनात्मक रूप से सटीक और संवेदनशील चित्रण किया है। लेखक इस बात को भली–भांति समझते हैं कि तथाकथित मुख्यधारा का समाज आदिवासियों को समान नागरिक नहीं मानता और उनके साथ सदैव भेदभाव एवं शोषण करता रहा है। उपन्यास में यह दृष्टि कई स्थानों पर उजागर होती है, जहाँ आदिवासियों की भलमनसाहत और निष्कलुषता का लाभ उठाकर उन्हें ठगा जाता है। लेखक ने आदिवासी समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी

सामूहिकता और उत्सवप्रियता को दर्शायाहै। आदिवासी समाज न केवल सहनशील है, बल्कि अपने अधिकारों के लिए सजग और संघर्षशील भी है। उपन्यास में उनके संघर्ष, न्यायप्रियता और आत्मसम्मान को कई बार रेखांकित किया गया है। भूमि, स्वतंत्रता और पहचान के लिए उनका प्रतिरोध आदिवासी चिंतन की मूल आत्मा है, जिसे रचनाकार ने सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। मैला आँचल में आदिवासी समाज का चित्रण केवल एक पृष्ठभूमि भर नहीं है, आदिवासी समुदाय के संघर्ष, अस्तित्व और गरिमा को भी संवेदनशीलता और सम्मान के साथ प्रस्तुत करता है। मेरी निगाह में यह उपन्यास इसलिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि लेखक ने आदिवासी जीवन के उस पक्ष को मुख्यधारा समाज के सामने रखा जिससे वे परिचित नहीं थे।

संदर्भ सूची :

1. रेणु, फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल, पृष्ठ– 100
2. रेणु, फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल, पृष्ठ– 100
3. रेणु, फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल, पृष्ठ– 102
4. रेणु, फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल, पृष्ठ– 154
5. रेणु, फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल, पृष्ठ– 219